# Khudiram Bose Central College

Under Graduate Intermediate Examination,2020

Subject- Hindi (G)

Semester - 4th

Paper- LCC2 (1)

Time- 2 Hrs. F.M-50

खण्ड- क

1.निम्नलिखित **प्रश्नों** में से किन्हीं **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए- 10X1=10

(क)'खरा' का विलोम शब्द लिखिए।

(ख) 'पेड़ से पत्ते गिर रहे हैं' में कौन-सा कारक है?

(ग) 'मन्वंतर' का संधि विच्छेद क्या होगा?

(घ) 'खानपान' में कौन-सा समास है?

(ङ) 'महल' का पर्यायवाची शब्द लिखिए?

(च) 'हाथ' का तत्सम शब्द लिखिए?

(छ) 'तिरछा' किस प्रकार का विशेषण है?

(ज) 'क्या' किस प्रकार का सर्वनाम है?

(झ) 'धन्य-धन्य!' किस प्रकार का अव्यय है?

(ञ) 'मक्खियां मारना' मुहावरे का सही अर्थ क्या है?

(ट) 'वाला' प्रत्यय जोड़कर शब्द लिखिए?

(ठ) ' स्वर्गप्राप्त' का समास विग्रह कीजिए।

खण्ड-ख

2. निम्नलिखित **प्रश्नों** में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- 4X2=8

**(क)** संज्ञा किसे कहते है**?**

**(ख)** विशेषण के कितने भेद है**?**

**(ग)** कारक के कितने भेद हैं**?** उनके नाम लिखिए।

**(घ)** समाम किसे कहते है**?** उनके कितने भेद है**?**

**(ङ)** संक्षेपण की परिभाषा लिखिए।

**(च)** सर्वनाम किसे कहते है**?**

खण्ड-ग

**3.** निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए- **6X2=12**

क) सर्वनाम की परिभाषा बताते हुए उसके भेदों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

ख) विशेषण की परिभाषा बताते हुए उसके भेदों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

ग) सम्प्रेषण किसे कहते हैं? इसके महत्व का विश्लेषण कीजिए।

घ) सम्प्रेषण के प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

**4.** निम्नलिखित में से कोई एक प्रश्न का उत्तर दीजिए- **10X1=10**

क) संज्ञा तथा सर्वनाम के अंतर को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

ख) उपसर्ग एवं समास के अंतर को लिखिए।

ग) संक्षेपण की विशेषताओं को सविस्तार लिखिए।

**5.** निम्नलिखित में से **कोई एक प्रश्न का** उत्तर दीजिए- **10X1=10**

क) निम्नलिखित पंक्ति का भाव पल्लवन कीजिए-

**जहाँ न पहुंचे रवि वहाँ पहुंचे कवि**

ख) निम्नलिखित पंक्तियों को संक्षेप में लिखिए-

ऋतुराज वसन्त के आगमन से ही शीत का भयंकर प्रकोप भाग गया। पतझड़ में पश्चिम-पवन ने जीर्ण-शीर्ण पत्रों को गिराकर लताकुंजों, पेड़-पौधों को स्वच्छ और निर्मल बना दिया। वृक्षों और लताओं के अंग में नूतन पत्तियों के प्रस्फुटन से यौवन की मादकता छा गयी। कनेर, करवीर, मदार, पाटल इत्यादि पुष्पों की सुगन्धि दिग्दिगन्त में अपनी मादकता का संचार करने लगी। न शीत की कठोरता, न ग्रीष्म का ताप। समशीतोष्ण वातावरण में प्रत्येक प्राणी की नस-नस में उत्फुल्लता और उमंग की लहरें उठ रही है। गेहूँ के सुनहले बालों से पवनस्पर्श के कारण रुनझुन का संगीत फूट रहा है। पतों के अधरों पर सोया हुआ संगीत मुखर हो गया है। पलाश-वन अपनी अरुणिमा में फूला नहीं समाता है। ऋतुराज वसन्त के सुशासन और सुव्यवस्था की छटा हर ओर दिखायी पड़ती हैं। कलियों के यौवन की अँगड़ाई भ्रमरों को आमन्त्रण दे रही है। अशोक के अग्निवर्ण कोमल एवं नवीन पत्ते वायु के स्पर्श से तरंगित हो रहे हैं। शीतकाल के ठिठुरे अंगों में नयी स्फूर्ति उमड़ रही है। वसन्त के आगमन के साथ ही जैसे जीर्णता और पुरातन का प्रभाव तिरोहित हो गया है। प्रकृति के कण-कण में नये जीवन का संचार हो गया है। आम्रमंजरियों की भीनी गन्ध और कोयल का पंचम आलाप, भ्रमरों का गुंजन और कलियों की चटक, वनों और उद्यानों के अंगों में शोभा का संचार- सब ऐसा लगता है जैसे जीवन में सुख ही सत्य है, आनन्द के एक क्षण का मूल्य पूरे जीवन को अर्पित करके भी नहीं चुकाया जा सकता है। प्रकृति ने वसन्त के आगमन पर अपने रूप को इतना सँवारा है, अंग-अंग को सजाया और रचा है कि उसकी शोभा का वर्णन असम्भव है, उसकी उपमा नहीं दी जा सकती।